बी० ए० - प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)
भारतीय दर्शन - I

भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं :

भूमिका : भारतीय दर्शन आस्तिक और नास्तिक रूप से दो सम्प्रदायों में विभाजित है। चार्वाक, बौद्ध, जैन, नास्तिक वर्ग में आते हैं। जबकि आस्तिक वर्ग में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदान्त आते हैं।

सामान्य रूप कुछ ऐसी बातें हैं जो सभी दार्शनिक सम्प्रदायों में प्राप्त होती हैं ये सभी दर्शनों के आधारभूत विशेषताओं के रूप में मान्य हैं- ये अधोलिखित हैं-

1. संसार को दुखमय स्वीकार करना -
भारत में दर्शन का विकास ही दुख से निवृत्ति के लिए हुआ है। सभी दर्शनों का मानना है कि संसार अथवा समस्त विश्व दुखमय है। इससे निवृत्ति पाना सभी मनुष्यों का अंतिम लक्ष्य है। दर्शन, इस निवृत्ति का मार्ग बतलाता है।

2. भारतीय दर्शन की दूसरी विशेषता यह है कि चार्वाक को छोड़कर प्रत्येक दर्शन सम्प्रदाय आत्मा की सत्ता में विश्वास करता है। उपनिषद से लेकर वेदांत तक आत्मा की खोज पर जोर दिया गया है।

Scanned By KagazScanner

चार्वाक दर्शन आत्मा और शरीर को एक दूसरे का पर्याय माना है। चैतन्य विशिष्ट देह से युक्त आत्मा को ही देह माना गया। आत्मा से पृथक नहीं है। कुछ आत्मा को क्षणिक मानते हैं उनके अनुसार आत्मा चेतना का प्रवाह है।

जैनों ने जीवों को चैतन्ययुक्त कहा है। चेतना आत्मा में निरंतर विद्यमान रहती है। आत्मा में चैतन्य और विस्तार दोनों है।

न्याय वैशेषिक आत्मा को स्वभावतः अचेतन माना है। चेतना उसका संचारी/आकस्मिक गुण है। इसी प्रकार सांख्य आत्मा को चैतन्यस्वरूप माना है। शंकर वेदान्त में आत्मा को सच्चिदानंद माना गया है।

3. भारतीय दर्शन का तीसरा सामान्य कर्म सिद्धान्त है:-

सभी दर्शन चाहे वह वेदों को मानते हों या ना मानते हों परंतु कर्म नियम को अवश्य मानते हैं। कर्म सिद्धान्त का अर्थ है - जैसा हम बोते हैं वैसा ही काटते हैं। इस नियम के अनुसार अशुभ कर्मों का फल अशुभ एवं शुभ कर्मों का फल शुभ प्राप्त होता है।

(Dr. Ram Narain Mishra)

Scanned By KagazScanner